शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'गोदान' का पुनर्पाठ : 21वीं सदी के सन्दर्भ में

डॉ.तृष्णा शुक्ला
प.म.ब.गुजराती विज्ञान महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द कराहती मानवता के साहित्यकार थे। होरी की त्रासदी कृषक वर्ग की त्रासदी है। एक गाय की अतृप्त लालसा बनी रहती है। मरते समय भी धार्मिक शोषण उसका पिण्ड नहीं छोड़ता। सारी उम्र द्वार पर एक गऊ नहीं बाँध सका और मरते समय गोदान की आशा की जाती है। होरी की त्रासदी पूरे कृषकवर्ग की पीड़ा है। 21वीं सदी के भारत में कृषक जगत की त्रासदी के सुलगते प्रश्नों का जिक्र करना आज बेहद जरूरी है।प्रस्तुत शोध पत्र में आज के सन्दर्भों में 'गोदान' उपन्यास का पुनर्पाठ किया गया है

प्रस्तावना

'गोदान' का रचनाकाल इतिहास भले ही कितना प्राचीन क्यों न हो , लेकिन 'गोदान' के प्रश्न चिन्ताएँ, संवेदनाएँ, चुनौतियाँ आज भी इक्कीसवीं सदी में ज्यों की त्यों दृष्टिगत है बल्कि कहीं अधिक खतरनाक रुप धारण कर चुकी हैं। गोदान में एक होरी की मृत्यु नहीं हुई , आज लाखों की संख्या में कृषक मृत्यु को गले लगा रहे हैं। भूमिहीन किसान के हितों की किसी को चिंता नहीं है, वह पहले भी मर रहा था , आज भी मर रहा है और भविष्य में भी..... वजह स्पष्ट है। किसान पैतृकवाद, कृषकवाद के दलदल में इतना फंसा रहता है कि उससे मुक्त नहीं हो पाता है। भारत के राजनेता, अर्थशास्त्री आने वाले दस-बीस वर्षों में भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का सपना देख-दिखा रहे हैं। एक अजीबोगरीब किस्म का आधुनिकीकृत विकास हो रहा है। उसमें किसान तो क्या गाँव भी नहीं बचेंगे। आज नवउदारतावादी कृषि नीतियों के चलते जिस प्रकार कृषि सम्बन्धों में परिवर्तन आ रहे हैं, छोटे-मझोले किसान खत्म हो रहे है , कर्जो के बोझ तले दबा किसान दम तोड़ रहा है। गाँवों का व्यापक स्तर पर शहरीकरण किया जाना , बड़े-बड़े फार्म हाउसिंज , कार्पोरेट जगत की गिद्ध दृष्टि गाँवों के विकास का एक ही विकल्प है सस्ते ऋण! जमी नों का बिकना , पलायन, झुग्गी-झोपड़ियों का फैलाव, भयंकर बेरोजगारी, घूसखोरी, दिहाड़ीदार मजदूरों जैसी स्थिति , दमघोटू फैक्टरियों, रासायनिक कारखानों में काम करने , रिक्शा खींचने, घरेलू नौकर गोदान कृषक जगत की इसी त्रासदी का आईना है।

'गोदान' उपन्यास और आज के सन्दर्भ

प्रेमचन्द छः दशक पूर्व ही पूँजीवाद के उभार को पहचान रहे थे। किसानों की क्या दशा-दिशा होगी! होरी की मृत्यु इसी भविष्योन्मुखी इतिहास दृष्टि का जीवन्त प्रमाण है। गोदान अपने समय का इतिहास बोध ही नहीं बल्कि आज के युग की चुनौतियों, प्रश्नों को समझने की दृष्टि है। भारत में इसी तरह एक तरफा पूँजीवाद विकास होता रहा, जिसमें गाँवों का विकास नहीं तो वह विकास नहीं महाविनाश का मार्ग है। हमारे जो विकास का माडल है, चंद लोग मिलकर कृषक को इस्तेमाल करके अपना मुनाफा बढ़ा रहे हैं और अपन उल्लू सीधा कर रहे हैं। सफेद पोश

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पूँजीपति किसानों का चोंगा पहनकर देश को चूना लगा रहे है। इतना ही नहीं समय बदला तकनीक बदली और ग्राम देवता भी बदल गए। खेती-किसानों का तरीका बदला तो खेत जोतने और माल ढुलाई के लिए बैलों की भी जरूरत नही रही। प्रेमचन्द के गोदान में कृषक जगत की त्रासदी 21 वीं सदी के भारत में कृषक वर्ग के छलावे की विकराल विडम्बना उभरी है एवं आज तक इसका कोई ठोस समाधान नहीं निकल सका है।गोदान की रचना पुकार-पुकार कर कह रही है समाज के इस कुरूप को बदलो कृषक से भी यही कह रही है कि तुम्हें अपना भाग्य आप बनाना होगा किसी नेता के सुधार करने से कुछ नही होगा। गुप्त शक्ति उनकी मदद करने नही आएगी। पाठक को गोदान झकझोर कर जगा रहा है कि बदलो इस समाज व्यवस्था की इस अर्थ तंत्र की विषमता और समाज की सभी रूढ़ियों को जडमूल से उखाड़ दो सभी मानव शोषित पद्धतियों का अंत करो , शांतिपूर्ण तरीके से संभव हो तो शांति से बदलो, नहीं तो क्रांति से बदलो , बदलना मुख्य बात है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द कराहती मानवता के साहित्यकार थे। अभाव , उत्पीड़न, शोषण, अन्याय, अत्याचार और गरीबी के ज्वलन्त घावों का जितना विशद् व्यापक और चित्रण किया बेजोड़ है। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और गाँवों की संस्कृति विनाश के कगार पर खड़ी है। गोदान का अन्त न केवल नामकरण की सार्थकता सिद्ध करता है अपित दुखान्त होने के कारण पाठक के मर्म को छूने वाला भी है। होरी की त्रासदी कृषक वर्ग की त्रासदी है। इन गरीबों को पेट भर मोटा-झोटा भोजन भी नहीं मिलता ,घी-दूध अंजन लगाने तक को नहीं मिलता। एक गाय की अतृप्त लालसा बनी रहती है। ऋण के भार से दबा सब उसका रक्त चूसते हैं, वह टूट जाता है और मर जाता है। मरते समय भी धार्मिक शोषण उसका पिण्ड नहीं छोड़ता। सारी उम्र द्वार पर एक गऊ नहीं बाँध सका और मरते समय गोदान की आशा की जाती है। उसके भाग्य के बारे में पंडित नेहरू ने कहा था- "भारतीय किसान में विपत्तियाँ सहने की आश्चर्यजनक क्षमता है और उसके भाग में विपत्तियाँ आती रहती हैं। अकाल, बाढ़ या रोग ओर निरन्तर निर्धनता एवं परिश्रम और जब वह उन्हें झेल पाता तो हजारों लाखों की गिनती में चुपचुपाते शिकायत का शब्द होठों पर लाये बिना पड़ा रहता है और मर जाता है। उसका विपत्तियों से बचने का बस यही ढंग है।"1

होरी की त्रासदी पूरे कृषकवर्ग की पीड़ा है। 21वीं सदी के भारत में कृषक जगत की त्रासदी के सुलगते प्रश्नों का जिक्र करना आज बेहद जरूरी है - कृषक क्यों मर रहा है ? क्या आत्महत्या ही अंतिम कदम है ? उसकी आर्थिक स्थिति क्यों बिगड़ती जा रही है ? वह गाँवों से क्यों पलायन कर रहा है ? कौनसी शक्तियाँ है जो उसे तबाह कर रही हैं ? होरी से भारतीय भूमिहीन किसान क्या सबक लेगा ? क्या मूकदर्शक बना रहेगा ? शत्रुओं को पहचान कर उनके विरूद्ध विद्रोह करेगा? क्या वह भूस्वामिता का यूटोपियाई स्वप्न देखता रहेगा ? कृषकों का भविष्य क्या है ? क्या वह इतना मजबूत संघर्षशील है कि विकल्प तलाश सके ? क्या गाँवों के प्रति संवेदना बची है? क्या किसान के आत्मसम्मान को चोट पहुँची है? क्या विकास माडल गाँव विरोधी है ?"2

गोदान का रचनाकाल भले ही कितना पुराना क्यों न हो, लेकिन गोदान के प्रश्न चिन्ताएँ , संवेदनाएँ, चुनौतियाँ आज भी इक्कीसवीं सदी में ज्यों की त्यों दृष्टिगत है बल्कि कहीं अधिक खतरनाक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रूप धारण कर चुकी हैं। ये चिन्ताएँ , संवेदनाएँ चुनौतियाँ आज भी इतनी वीभत्स बनी हुई हैं। राजसत्ताओं के एजेण्डा में गाँव और भूमिहीन किसान नहीं है। उनके एजेण्डा में है बड़े जमींदार, सूदखोर महाजन , पूँजीवादी शक्तियों के हित , रासायनिक खेती , कृषि का नवउदारीकरण , वैश्वीकरण और मुनाफा , किसानों की स्थिति दिहाड़ीदार मजदूरों जैसी होती जा रही है वे दूसरे बड़े जमींदारों के खेतों पर ठेके से दिहाड़ी पर काम करते है। इस प्रकार नवउदारीकरण , भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण की प्रक्रिया से शहरों और गाँवों के बीच फासला बढ़ा है, बेरोजगारी बढ़ी है। बहुत तेजी से खेती के मशीनीकरण , आधुनिकीकरण ने भी रोजगार के अवसरों को खत्म किया है। आवास की समस्या झुग्गी-झोपड़ियों में रहने को विवश यह वर्ग कहीं का नहीं रहा है। ग्रामीण कहलाने में शर्म महसूस करता है बेगानों की तरह शहरों में पत्थर फोडू काम करना , दम घोटू फैक्टरियों , रासायनिक कारखानों में काम करने , रिक्शा खींचने , घरेलू नौकर के काम करने पड़ते है।"3

गोदान कृषक जगत की इसी त्रासदी का आईना है। आर्थिक दबावों के कारण आत्महत्याएं आम होती जा रही हैं।

प्रेमचन्द उस युग इतिहास परिवर्तनों की प्रक्रियाओं, पूँजीवाद के उभार को पहचान रहे थे कि अब गाँवों में क्या संकट आने वाला है ? किसानों की स्थिति क्या होगी ? वह भी होरी जैसे किसानों का भविष्य क्या होगा ?4 प्रश्न उठता है कि होरी अपने बेटे गोबर को गाँव छोड़कर जाने तथा कृषि सम्बन्धों से नाता तोड़ने मजदूरी करने की बात क्यों कहता है ? उत्तर स्पष्ट है प्रेमचन्द छः दशक पूर्व ही पूँजीवाद के उभार को पहचान रहे थे कि अब भूमिहीन किसानों की क्या दशा-दिशा होगी! उनका भविष्य अब खेती में नहीं। पाँच बीघा जमीन के स्वप्न में नहीं, मजदूरी करने में है अन्यथा वह भी बर्बाद हो जाएगा। भूमिहीन किसानों की संतानों का रास्ता खेत की पंगड्डियों की ओर अथवा शहरों की मजदूर मंडियों की ओर गाँवों से पलायन शहर में काम की तलाश। आज वास्तव में जो खतरा उभरा है उससे किसान का भविष्य असुरक्षित है। कृषक वर्ग की तमाम विडम्बनाऐं एवं लाचारी उसके भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगाती है होरी की मृत्यु इसी भविष्योन्मुखी इतिहास दृष्टि का जीवन्त प्रमाण हैर्। गोदान अपने समय का इतिहास बोध ही नहीं बल्कि आज के युग की चुनौतियों, प्रश्नों को समझने की दृष्टि है। गोपाल कृष्ण कौल युग जीवन के चित्रण को गोदान का कथन मानते हुए कहते है- गोदान में अपने युग का प्रतिबिम्ब भी है आने वाले युग की प्रसव व्यथा भी।"5

यदि भारत में इसी तरह एक तरफा पूँजीवाद विकास होता रहा जिसमें गाँवों का विकास नहीं तो वह विकास नहीं महाविनाश का मार्ग है। हमारे जो विकास माडल है वे गाँव विरोधी है किसान विरोधी है गाँव के उत्थान विकास के माॅडल नहीं बल्कि महाविनाश के है। पूँजीपति कृषक का विकास अर्थात "करोड़पति किसानों के रिटर्न जाँच के दायरे में प्रदेश में 88 किसान चिन्हित, सर्वाधिक बंगलुरु के खेतों में एक करोड़ रूपए से ज्यादा की सालाना कमाई वाले किसानों के इनकम टैक्स रिटर्न जाँच के दायरे में। पहले चरण में म.प्र. के 88 और देशभर के 2746 किसानों को चिन्हित किया गया है खेती की आड़ में कालेधन और बिना खाते में जमा धन को सफेद किया जा रहा है। बैंगलुरू से 321 दिल्ली 275, कोलकाता 239, मुम्बई 212 एवं म.प्र. से 88

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किसानों को चिन्हित किया है। "6. वहीं न्यूज नेशन पर 13 मार्च की परिचर्चा ने खलबली मचा दी। परिचर्चा का विषय 'खेतों में खजाना' पूँजीपति कृषक फार्म हाऊस खाते में दिखा कालेधन को सफेद कर रहे है क्योंकि ये पूँजीपति लम्बी रेस के घोडे है जो अपने खेत से खेल-खेल रहे है। कर्ज में डूबे हुए किसान की इतनी कमाई कैसे ? यदि किसानों से इतनी आमदनी होती तो गरीबी हट जाती। भारत फिर सोने की चिड़िया होता। हमारे किसानों का भविष्य उज्जवल होता जबकि सच्चाई यह है हमारे बेचारे लाचार असहाय किसान के लिए सरकार द्वारा टेक्स मुक्त कृषि नीति का प्रावधान है।

दिलचस्प बात यह है कि सरकार की मंशा पर सवालिए निशान उठ रहे है चंद लोग मिलकर कृषक को इस्तेमाल करके अपना मुनाफा बढ़ा रहे हैं और अपन उल्लू सीधा कर रहे है। खेती की इनकम का खेल शतरंज की बिछात बिछा कर जोर-शोर से खेला जा रहा है जाँच पड़ताल में उलझने की महारत में शामिल सरकारी दावँ-पेंच की कोशिश भी शुरू हो गई है।

पूँजीपतियों के घोटालों की जाँच का नतीजा भी सिफर आता है। भास्कर-खास हेडलाईन 'नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट करनाल का दावा अब यह संभव कि केवल मादा पशु जन्म लें 'बैल हुए गैर जरूरी, अब पैदा होगी केवल गाएँ ' समय बदला तकनीक बदली और ग्राम देवता भी बदल गए। खेती-किसानों का तरीका बदला तो खेत जोतने और माल ढुलाई के लिए बैलों की भी जरूरत नही रही। अब ज्यादातर लोग सिर्फ गाय पालना चाहता है क्योंकि बस दूध की जरूरत है यह संभव भी हुआ कि केवल गाय ही जन्म लें। बैलों का अब खेती में भी उपयोग कम हो गया है। भारत भी इसी दिशा में काम कर रहा है। "7 ये कैसी कृषक त्रासदी है भारत की 80 प्रतिशत कृषक जनता की मूक चीत्कार केदारनाथ अग्रवाल के कविता संग्रह 'युग की गंगा' में गूँज उठी है। यह धरती है उस किसान की , जो बैलों के कंधों पर, बरसात धाम में, जुआ भाग्य का रख देता है, खून चाटती हुई वायु में। पैनी कुसी खेत के भीतर, दूर कलेजे तक जाकर जोत डालता है मिट्टी को, पांस डालकर और बीज फिर बो देता है , नए वर्ष में नई फसल के। ढेर अंन्न का लग जाता है। यह धरती है उस किसान की।"8

प्रेमचन्द के गोदान में कृषक जगत की त्रासदी 21वीं सदी के भारत में कृषक वर्ग के छलावे की विकराल विडम्बना उभरी है एवं आज तक इसका कोई ठोस समाधान नहीं निकल सका है। प्रेमचन्द से बेहतर भारतीय कृषक को कौन जानता होगा ? गोदान को लिखे आधी शताब्दी से अधिक समय बीत चुका है फिर भी गोदान नया है तरोताजा है क्योंकि प्रेमचन्द कभी भी 'आऊट आफ डेट' नहीं होंगे प्रेमचंद ने गोदान लिखकर अंधकार में रोशनी की एक किरण दिखाई थी और प्रश्न चिन्ह लोगों के समक्ष रखा था कि हमारे अन्नदाता किसान इतने विवश क्यों है। "आज हर रोज होरी मर रहे है। मरने के कगार पर है। आत्म-हत्याएँ कर रहें है। किसान गांव से पलायन कर मरते रहेंगे लेकिन उन्हें अब अपनी भूमिका पहचाननी होगी एवं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा अन्यथा धूमिल के इन शब्दों को भी याद रखना होगा , " एक आदमी रोटी बेलता है , एक आदमी रोटी खाता है। एक तीसरा आदमी भी हैं जो न रोटी बेलता है, जो न रोटी खाता है। वह सिर्फ रोटी से खेलता है। यह तीसरा आदमी कौन है , मेरे देश की संसद मौन है। "9 अरबों लोगों की रोटी से खेलने वाला यह तीसरा आदमी जो सिर्फ रोटी से

खेलता है और इस खेल में अब सभी शामिल है।'' रोटी से खेलने वाले इस तीसरे व्यक्ति की तलाश ''खेती के जरिए काली कमाई का मामला संसद में उठाने की कवायद की जा रही है यह पड़ताल कितनी बेनकाब होगी पूँजीपतियों , सत्तधारियों की काली करतूतों को सफेद-पोश अमली जामा पहनाने में कोई कसर नही छोडी जाएगी।''

निष्कर्ष

गोदान की रचना पुकार-पुकार कर कह रही है समाज के इस कुरूप को बदलो कृषक से भी यही कह रही है कि तुम्हें अपना भाग्य आप बनाना होगा किसी नेता के सुधार करने से कुछ नही होगा। गुप्त शक्ति उनकी मदद करने नही आएगी। पाठक को गोदान झकझोर कर जगा रहा है कि बदलो इस समाज-व्यवस्था की इस अर्थ-तंत्र की विषमता और समाज की सभी रूढ़ियों को जड़मूल से उखाड़ दो सभी मानव-शोषित-पद्धतियों का अंत करो , शांतिपूर्ण तरीके से संभव हो तो शांति से बदलो, नहीं तो क्रान्ति से बदलो, बदलना मुख्य बात है।''10

उपन्यास के अंत में गोदान अंतिम कर्म को ही नहीं दर्शाता अपितु एक युग के अंत और दूसरे युग के उदय की सूचना भी देता है। गोदान प्रेमचंद की सर्वोत्कृष्ट रचना है। तत्कालीन समाज और उसकी अर्थव्यवस्था को चरमरा देने वाला आक्रोश इस कृति में चरम सीमा पर है।

संदर्भ ग्रंथ

1.'गोदान दृष्टि-प्रतिदृष्टि-सम्पा- डॉ.राजेन्द्र टोकी प्रथम सं.2011 प्रकाशन-विमला बुक्स ई 1/267, दिल्ली पृष्ठ 978.81.88939.23.7 प्रेमचन्द का अमर पात्रः होरी-रफिया शबनम आबदी पृ. 76

2. गोदान दृष्टि-प्रतिदृष्टि-वही

गोदान : इक्कीसवीं सदी का सच 'उजडते गांव मरते किसान, डॉ..राकेश कुमार पृष्ठ 11-17

3. गोदान दृष्टि-प्रतिदृष्टि-वही

गोदान : इक्कीसवीं सदी का सच 'उजडते गांव मरते किसान डॉ.राकेश कुमार पृष्ठ 11-20

4. गोदान दृष्टि-प्रतिदृष्टि वही

गोदान : इक्कीसवीं सदी का सच 'उजडते गांव मरते किसान डॉ.राकेश कुमार पृष्ठ 14

5. गोदान दृष्टि प्रतिदृष्टि वही , हेमराज निर्मम-गोदान का कथ्य पृ. 130

6. दैनिक भास्कर शनिवार 12 मार्च 2016, संजय गुप्ता /इन्दौर मुख्य पृष्ठ 01

7. दैनिक भास्कर शनिवार 12 मार्च 2016, दिनेश माहेश्वरी/ कोटा देश-विदेश पृ. 16

8. लोक दृष्टि और हिन्दी साहित्य , चन्द्रबली सिंह, अरूणोदय प्रकाशन, संस्करण 1992 युग की गंगा पृष्ठ 73

9. गोदान दृष्टि प्रतिदृष्टि-वही गोदान इक्कीसवी सदी का सच' उजडते गांव मरते किसान डा॰. राकेश कुमार पृ. 27

10. मुंशी प्रेमचंदवृत गोदान (मूल्यांकन) डॉ.कृष्णदेव झारी, नेशनल काउंसिल आफ हिन्दी लिट्रेचर संस्करण प्रथम 2012,.81.89562.06.01 गोदान में कृषक समस्याएँ, पृष्ठ 98